



५५५

[illegible]

[illegible]

नानियद्दिशं डं दृग्गुह्यं वान॥
डंडरायिद॥ इति च लक्या
ल॥

डंथोलसंकुलसंगुन दूक
नारसमद्युति । गदा धवा
वाकस (म) धायनव विली
षण ॥ यीनवदन ॥ वद ॥ डं
कसाता (म) ॥ सा ॥ डंथोल
कंकलसंजाग लंका वास
सिगसदा । वाकसा विव
गिदव नमस्कृति शीव
॥ ॥ अगम्यादि ॥ ॥

डं दयायनमशा धा न ॥ डं
धूसवर्धमहागंड (म) ॥
दा महाद्युति । सा पद्मा
कुलजाग धायन दयद
वगा ॥ यीनवदन ॥ वद ॥ डं
अय ॥ सा ॥ डं दयाध
नूकगा (म) ॥ सनी नखिव
लोमनि । नमामि मुनिय
(म) ॥ सनी उन्नत मामा
॥ ॥ अगम्यादि ॥ ॥

डं तनगुनामायन मशा धा
न ॥ डं डमदमिद लजाग

धामाजनसद्युति । धायन
य ॥ गुनामाय यं गुयातिथ्य
सर्वदा ॥ हनिनवदन ॥ वद ॥
डं दयायनन ॥ सा ॥ डं सम
लकलकषण नउसानलसं
निन । सनिदं हनिवायानि डं
मदमिनमासुन ॥ अगम्या ॥

डं मार्कण्डेयनमशा धा न ॥
डं वटवकसमावृटा कुरुम
कुरुवास सा । मभिनाजनम
मुय । मार्कण्डेयननमशा (म)
नवदन ॥ वद ॥ डं सकप्रव
य ॥ सा ॥ डं मार्कण्डेयामहा
राग मार्कण्डेयामहामुनि ।
नमामियनगरुहा विलंजी
वनमासुन ॥ अगम्यादि ॥ ॥

डं नरकलसद्युजा आय ॥
डं सथाजाग ॥ डं वानमद्य ॥
डं यानवद ॥ डं यत्यवष ॥
डं नसीगन ॥ हनिनवदन

ॐ द्वादशलाक्या लाङ्घन॥
ॐ गगनमिड॥ ॐ सुप्रसूता॥
ॐ यमनदत्त॥ ॐ यन्त्रद्वी॥
ॐ ॐ ममवन्धु॥ ॐ नववाय॥
ॐ कुविदंगय॥ ॐ गमीगाना॥
ॐ शनियदा॥ ॐ वृक्षयज्ञ॥

नथयुजन॥ ॐ सुययनारुनिकषा॥
सुयनसिसुयनथसुयनथाकाशस
नानीयमलो॥ द्युतिकेसुलावकुरु
लावायनसीदेकिषययनवाहनि
४ यो नमथावध॥ यदुगिसुका
नमा॥ सुननावकुनमुदयकुनयद्विभा
यन्त्रनादिविगमयाजिनदक्ष॥
हासा॥ ॐ नववाय॥ ॐ नित्य॥

म्यउजायुजन॥ ॐ गधना
त्वा॥ ॐ गधना॥ ॐ मना
मनर्थयन॥ ॐ नित्यगधयुजा॥

वलियुजन॥ ॐ नमायकुश
य॥ ॐ सुसंख्याता॥ ॐ सु
वायनि॥ ॐ नित्यवलियुजा॥ ॥

गगनसयुजन॥ ॐ आर्यगो॥
ॐ सुदितिद्यो॥ ॐ मानसाक॥

कोमावीयुजन॥ ॐ वृक्षय
ज्ञान॥ ॐ नमः॥ ॐ नवाय॥
ॐ यगवाना॥ ॐ रुदविष्णु॥
ॐ यस्यकुम्भा॥ ॐ रुद्रद्वी॥
ॐ जानप्रदने॥ ॐ दिनधव
र्मा॥ ॐ नित्यकलशाकासा॥

दूवाविष्णुयुजन॥ ॐ आरुभू॥
ॐ रुदविष्णु॥ ॐ नमः॥ ॐ नवाय॥
ॐ गगनात्वा॥ ॐ नमावकुश
य॥ ॐ गवाना॥ ॐ नमा॥ सुस
र्थया॥ ॐ रुद्रस्यगति॥ ॐ शी
थना॥ ॐ विष्णुगधयुजा॥ ॥

नगामासयकुयुजन॥ ॐ सुद
मास॥ ॐ सुययनिक॥ ॐ रु
द्रा॥ ॐ यदुयति॥ ॐ नद्वय
सासाहा॥ ॐ यगवाना॥ ॐ
सुययना॥ ॐ समसवाति॥
ॐ सुकनाकाय॥ ॐ मगवत्वा॥
कसकन॥ ॐ समिन॥ ॐ सिधम
दा॥ ॐ शीथन॥ ॐ रुद्र॥ ॐ य
रुतनी॥ ॐ नवय॥ ॐ सुनयन॥

गामूल ॥ उं न भावस्तेय ॥ धूय ॥
 उं धूय न सि ॥ दीय ॥ उं न जाति ॥
 यतिं ॥ उं म ना कुंति ॥ ऊय
 स्माय ॥ उं न नारायधि ॥ यथा वा
 नति ॥ ॥ ॥

वायुमययुजायया ॥ उच्यते
 ध्याय ॥ ऊऊनस्य सोमनध
 नारुनवाक ॥ नदीकस्थन ॥
 आदार्थ ॥ इन्दमासन या
 दार्थ रुसाध्व यन्दन ऊऊ
 मत्थान धूप दीप अग्न
 धादि ॥ अन्नसंकल्पविय
 कनन अन्नसंकल्पशुद्धिद
 मस्तु ॥ धवाकननया ॥ ॥

भक्तिक, युक्तिक यदययान
 स्थानविः सकलसुविय ॥ ॥
 डं स्वस्तिनामीमाना ॥ डं कनि
 कदा ॥ डं जगद्गुणिभाना ॥ डं
 यज्ञायना ॥ डं सरुशमीया ॥
 डं विना ॥ डं नमस्ते वूड ॥

डं वय ० साम ॥ डं स्वस्ति न ॥
 ॐ ह्रीं ॥ डं वय १ यथिय ॥
 डं विष्णु ललातमसि ॥ डं अग्नि
 र्दयता ॥ डं द्यौः १ भक्ति ॥ भक्ति
 कः स्नान कलस सतयक ॥ ॥
 डं शुं वरक ॥ यैष्टिक स्नान यजु
 मानविय ॥ ॥ ॥

यंथा कर्मस ॥ लासातु रुया
 वे स्वस्तिकसग ॥ निर्मक्कतु या
 य ॥ डेनका रुन ॥ वलि ॥ डंभ
 ध्येयावति ॥ वातकन काय
 लंखनहाय ॥ ॥ कलमि
 स्वानननका ॥ रुदमासन ॥
 अर्घ्य ॥ वदन ॥ सिंदूर ॥ यक्षा
 यविने ॥ वृषा ॥ ॥ नवयल
 दि ॥ अग्निस्नामादि ॥ मलय
 ति ॥ द्रव्याल ॥ ॥ अथ ॥
 कोमावी ॥ वरिडावाभादि ॥
 रुद्रवना ॥ रुद्रमासनादि
 पूर्ववत् ॥ यय ॥ दीय ॥ ॥ अ
 मग ॥ दइ ॥ लं गयाव अर्घ्या
 चक ॥ ॥ अथ ॥ आदि

तया ॥ मणिक ॥ अथवा सिद्धता
उंजादियाय कलिम्पद ॥ अह
वायं तादयं दह केसकम्यो
जाताय विष्णुमनकेजाय का
म्ययमोगय दुगीजातय ला
हिगवर्धय वरुनाठनय
मध्ययम्रकिनाय यूवोरिम
र्याय दादगाहिवियमानाय
मादिरादवताय अभिदवन
धनय यथाभिदवतामय
हिवधमयसमयसविनाद
वता गृष्टयमृदस अरुन
नगवसहिनाय हंमोसुध
यउमानस्य स्वसंज्ञासगव
स्यविवावादिता उत्पन्नका
मादिशमकयीठादनिनाय
माथथमायवावाय सक
मिसनानलकी कामनार्थ
मादियायसमगस्यविवा
नरुणः ॥ ६००॥ यमर्षगृहानस्य
हा ॥ ॥ मणि ॥ अथवा ॥ हा
हा ॥ उं सामाय शीवसम

उं द ॥ ॥ रुवाय वेगमकयव
उं द ॥ ॥ जानाय कृत्तिकनके
जाय अरुयस्यमगाय वे
स्यजानय स्वगवर्धय अह
वट्टाकनय माभययम्रकिनाय
दक्षिणारिमूवाय थादमभुनि
यमानाय सामाय सुविदवता
इमाय यथाभिदवतामय ॥ मा
नमअमय मयगीष्टयस
रुननगवसहिनाय हंमोमि
सादि ॥ ॥ यहा ॥ उं मगीनाय
अवकिद ॥ अरुवाय मायक
दगम्यो जानाय यूवोपाटन
कगय लानदाडा ॥ मगाय
कगी जानय लाहिगवर्धय
काधकनय दक्षिणयम्रकि
नाय यथिमारिमूवाय च
उं वार्धिवियमानाय अगीव
दवताय सुविदवतास्वद्या
य यथाभिदवता केनय वि
नूयाकममिअगीवदवता ॥ मा
यगीष्टयस अरुननगवस

[illegible]

(६) यथाविधवर्गद्वय, उम
 दंभिप्रविष्टरुस्यतिदवता, रु
 द्युष्टदस, अरुनगधसहि
 नाय, ६० मामिथादि ॥ ८ ॥ रुन
 अथवाहृकि ॥ उं शुक्राय, रा
 गवटदंभद्वय, चरुष्ट
 नवम्यांजाताय, यूषानकंजा
 य, राक्षसगणाय, वाक्त्रगजा
 नाय, शुक्रवर्णाय, वरुष्काना
 कनय, यथैयद्विनाय, यथै
 रिमूरवार, नवाहुनियमामा
 य, शुक्राय, अविधवताय, ७
 काय, यथाविधवर्गद्वय, व
 निष्प्रविष्टरुदवताय, रु
 द्युष्टदस, अरुनगधसहि
 नाय, ६० मामिथादि ॥ ९ ॥ नील
 अथवा, न ॥ उं ननिश्चयाय, य
 नावृष्टद्वय, मायशुक्रने
 वम्यांजाताय, नादिगिनकंजाय,
 काश्चयगणाय, सुदजागय,
 रुष्टवर्णाय, नीलाय, दीर्घा
 नय, यथैयद्विनाय, य
 दिमूरवार, वरुणाहुति

यमानाय गनीय नाय अधि
दवनाय यमाय यथाभिद
वनाय यजाय नय याजा
यमिमाय गनीय नववनाय
गयगीकृतस अथ नग
घसहिनाय ॥ १० ॥ मामित्यादि ॥
॥ ११ ॥ नावट काल ॥ उ नाह
य मलयद गहवाय अधि
नीय नय यमाय नाय
नननिनके नाय यो न नग
य ॥ उड जानय दधवनाय
मनाकृतय नय नय नय
किनाय यथिमलि मरवाय
अथ नय नियमानाय नाहव
अधिदवनाका नाय यथा
धिदवनासर्वाय वामदम
विमोददवनाय गयगीकृ
स अथ नग घसहिनाय ॥
मामित्यादि ॥ १८ ॥ कथन
न ॥ उ कथन व गीय वनद
गहवाय शवदकसुग

मावासां जानाय अथ नय
नाय उ मनि गगय सुड जा
नय धू मवनाय स्वमा कृत
य वायवाय दधिनाय य
थिमा रिमरवाय वरु नाह
लियमानाय कन व अधिद
वनाय विरुकाय यथाधि
दवनाय उ कथन वनाय कृ
दवना गयगीकृतस अथ न
नग घसहिनाय ॥ १० ॥ मामित्या
दि ॥ ११ ॥ ल ॥ उ कथन व स उ न
स्य द गहवाय स्वमा सय द मि
धि स्ववलायां जानाय स्व न क
नाय स्वगगय स्व जानय
स्व न वनाय स्वसि कार्कृतय
स्वार्थ नियमानाय गु न मा म
याम धिय दधिनाय यथिमा
रिमरवाय उ न न अधिदव
ना सय मय यथाधिदव
नाहिन व गहवाय य उ
मानाय गग नय उ न दव

गाउगरीश्वरस मासादि
 उवाय अरुन न गणसहि
 नाय ॐ मासिह्यादि ॥ ॐ ॥
 अथ कमादि अथ कावयत्रा
 उंसखभायसमोवाय सय
 वरुलसयन । गृहानाथम
 यादक अथाययनि गृह
 गा ॥ ॥ मधुलादि साय ॥
 उन्मासयुग्मकलम यनमश
 उडमाविन ॥ ॥ उं चिलि
 वरु ॥ ॥ उं विद्युदवाय ॥
 उं निर्वाण ॥ ॥ उं गवनरु ॥
 वदिगाव ॥ ॥ उं वक्राय
 नी ॥ ॥ उं शुक्लिना ॥ ॥ उं
 थस्मावावि ॥ ॥ ॥ उं ॐ
 वदवनममुय ॥ अथ
 दि ॥ ॥ मधुलाविसड
 व ॥ दक्षिणनयक ॥ अथ
 बीद ॥ गृहविसड ॥
 दानवियक उडमान ॥ ॥
 आदिवादिप्रमण दानव

द्या ॥ ॥ अथ विम्वदनसा अथ
 विम्वयावाक ॥ ॥ कविलया
 दि ॥ सामया ॥ अथ ॥ उं वृण
 गय ॥ अथ ॥ अथ ॥ उं
 धर्मव ॥ वधया ॥ लू ॥ उं दि
 नय ॥ वृहस्यनि ॥ यानवकु ॥
 उं यीवकुयग ॥ शुके ॥ सउ ॥
 उं विम्व ॥ गनीश्वर ॥ सा ॥
 उं न वीमग ॥ नाक ॥ खर
 उं सत्माइर्मा ॥ कत ॥ उं स
 त्मा ॥ उमन ॥ खाता ॥ उं यत्मा
 दसन ॥ ॥ अथिहदान ॥ ॥

अथ विम्वदिवदानविय ॥
 अथ कमाय ॥ उं दमासन ॥
 यथ ॥ वदनादि ॥ वाको ॥
 उं वत्सवीयत ॥ वीयत
 वृक्षसंलिनी ॥ वीथोता ॥ अथ
 किं ददि मत्वं यय ॥ अथ ॥
 अनियविय ॥ वडनघटि ॥
 वकुदोगय ॥ वायक ॥ लन ॥
 वरुददस्य ॥ वृणमिल डले

नविमूयदृगं ॥ अथादि ॥

यजमानस्य रिमनधानान
निमिर्गर्थं ॥ इदं वज्रं दृष्टिने
जीवत्स दानदृष्टं संयुदधं ॥
वाक्कायन ॥ स्वस्ति ॥ कादा ॥
दक्षिणा ॥ आग्रादीद ॥ इवा
कृष्णस्य ॥ इति धीवत्स दान ॥

वर्त ॥ इदमासननमः ॥ यच्च
यदनादि ॥ यथायविनं य
यव ॥ दृष्टं दृष्टं जल ॥ वाक्का
इत्युत्तीकतिनालासा ददा
नामतिवल्लरं ॥ यद्युत्तीकय
दानत दीर्घमायुययक
ति ॥ सर्वं पूर्ववत् ॥ इति ॥

वासायनमः ॥ इदमासनादि ॥
यदन उक्तायविनं ॥ वाक्का ॥
इदं दृष्टं दृष्टं ददाय ॥ य
दृष्टं जयकाक्षय ॥ नस्मान्
यजमानन जयकवत्
नसदा ॥ सर्वं पूर्ववत् ॥ ॥

इत्तमननमः ॥ इदमासनादि ॥

यदन उक्तायविनं ॥ वाक्का ॥
इदं कलगतं सर्वदवानां म
लिस्त्रं मार्गलस्येव ॥ सर्वं नीधे
मयिजस्मान् नस्मान् ॥ निव
यकम ॥ सर्वं पूर्ववत् ॥ ॥

ताविषयायनमः ॥ इदमासना
दि ॥ यदन उक्तायविनं ॥ वा
क्का ॥ इदं वमननमनात्यत्वं ल
कायावर्तिवावृधं ॥ सगार्कमा
कसेयत्वं मत्तं ॥ निवययकम ॥
सर्वं पूर्ववत् ॥ ॥

इवायनमः ॥ इदमासनादि ॥
यदन उक्तायविनं ॥ वाक्का ॥
इदं दिव्यं मर्गवृथं समुद्र
नवायविनं ॥ इदं नायदवाय
मत्तं ॥ निवययकम ॥ सर्वं
पूर्ववत् ॥ ॥

यत्रुनामायनमः ॥ इदमास
नादि ॥ यदन उक्तायविनं ॥ वा
क्का ॥ इदं अत्रुवृथं दृष्टं ॥



लि. कुर्य सर्वश्रद्धा. नस्मात्
कुरुयदानेन. नासुनिहलये
दा. नर्वयववे ॥

मा. क. ध. यनमः ॥ १०८ मा. सन ॥
च. द. न. उ. क्का. य. वि. न. ॥ वा. क. ॥
ड. न. ता. क. ले. स. म. क. न. सं. य. स. ॥
क. र्ण. दे. वी. वे. स. स. वि. ष. या.
लो. र्ण. न. स्मा. र्ण. नि. य. य. क. म. ॥
लो. र्ण. व. य. व. ॥

वा. क. र्ण. व. न. म. मान. ॥ दान. क.
का. य. वि. न. हा. ना. व. श्वा. य. ॥

य. उ. मा. न. क. र्ण. या. र. ल. य. न.
हा. य. ॥ म. क. र्ण. ना. उ. वा. न. ला.
य. ॥ स. य. उ. न. वे. क. र्ण. या. व. ला.
य. ॥ व. क. र्ण. वि. य. ॥ य. लि. ल. द. वि.
य. ॥ व. द. ॥ ड. व. सा. य. वि. न. सि. ॥
व. क. नि. ॥ ड. र्ण. वा. स. वा. ॥ क. स. ॥
ड. ग. य. ड. या. व. र्ण. ॥ ल. व. र्ण. ॥
ड. य. न. ड. क. ॥ य. वि. न. ॥ ड.
क. र्ण. द. ॥ सा. न. मा. ल. ॥ ड. या. ॥
रु. ल. नी. ॥ स. य. उ. र्ण. गा. वी. द. ॥

मा. ल. स्वा. न. ॥ व. द. ॥ ड. या. आ. हा.
न. ॥ श्वा. न. स. य. वि. य. ॥

क. ल. स. स. ड. क. व. स. क. य. द. क्का.
य. ॥ या. न. व. र्ण. स. क. म. क. र्ण. का.
व. य. ॥ ग. य. क. र्ण. ग. य. क. र्ण. न.
य. ॥ ड. व. वा. ॥ ग. य. क. ॥ ड. व. क.
सि. क. वि. क. र्ण. न. य. ॥ १ ॥ ड.
ड. क. ॥ २ ॥ ग. नि. वा. सा. य. ॥ ३ ॥
व. वा. नि. मा. या. रि. वा. य. ॥ ४ ॥
य. क. र्ण. व. स. य. ॥ ५ ॥ य. क. र्ण. व. स. य.
स. य. ॥ ६ ॥ स. क. य. द. र. व. सा. मी.
म. न. व. ना. र. व. वि. क. र्ण. न. य.
ड. ॥ ७ ॥ य. य. वा. स. य. ॥

स. य. द. र्ण. द. ॥ ड. न. व. क. र्ण. द. व. ॥
स. य. द. र्ण. वि. या. य. स. न. सा. ॥
म. स. न. सा. स. य. न. न. ॥ ड. द. वि.

नमः॥ उं विर्गलायनमः॥
उं साधनसतयथादि॥ उं स
कुरुनमः॥ यनमः॥ ध्यान॥
उं यथासमंथादि॥ ध्यानयथा
उं सूर्याय॥ उं अर्जुनाय॥
उं आदिशाय॥ उं द्वात्रिंशत्तमं॥
उं दिवाकलाय॥ उं साकवा
य॥ उं वक्षाय॥ उं यथाक
जाय॥ उं विज्ञातनाय॥
उं साधन॥ उं विवर्धन॥
उं दयादि॥ आवाहनादि॥
धृति॥ दाय॥ उं यथा॥ उं
एकवक्त्रं॥ उं अथ
दि॥ अथयनं॥ उं कानयथा
ताय॥ उं नित्यं॥ उं अथ
नकाय॥ नथदानविय॥ वा
य॥ उं अथमथरुतं॥ यथा
कथमस्य॥ गुरुवत्॥ (ग)
तुमिदि॥ अथरुति॥ दद्यात्
पात्रदि॥ उं नमः॥ दानं॥ वासि
मुरु॥ अथ॥ उं यथा॥ नमः॥ दद्यात्

हं॥ नमः॥ दानं॥ संधायं॥ सूर्य
लाकं॥ गच्छति॥ अथ॥ दानविय॥
वाक्यं॥ दक्षिणादानं॥ कल
गच्छति॥ अथ॥ सूर्य॥ गच्छति॥
रुति॥ नमः॥ अथ॥ नमः॥ ॥

ॐ नमो ब्रह्मा (नमो) ॥ ॥
ॐ गुरुयतिषा विधे न ॥
नकसं नवलियां न विद्या
वसकेलिन न वा आदाव
वलिसका याव वाव काका
य ॥ अमाद गुण गत्य का
नगवाव वरु श्रुता मि
सर्वे रसी द्वा सा द्यु ले
था न दृग्धन ॥ ॥ धन धन
काव यश्च गत्य साधन ॥ १ ॥
यश्च गत्य गिरा गं ॥ यद् मान
विय ॥ ॥ यथा विधानेन
अग्निकार्यं काव य ॥ क
ल गार्ध्व ॥ यद्वा दनि ॥ तिला
दनि ॥ दृग्धन ॥ वन ॥ नग य
था कर्मका नेथ ॥ यथा क
र्म न स ॥ स्वस्ति कर्म या
व ॥ कृत याव ॥ कादा ल स
द्रसक न ग याव ॥ नि म
वृ न ॥ मतरु ना दवा स रु
जय र्ग ॥ ॥ कसके न

स्नान ॥ यश्च गत्य स्नान ॥ यश्च ग
द्यन न ल स आदिन सकल नि
न हाय ॥ ॥ यश्च गत्य वरु
न ॥ दग विद्या य ॥ साधन ॥
दिन ल न यश्च गत्य न यश्च
न साधन ॥ ॥ यट सिंघु जा
याव क ॥ कस व लिवि यक ॥ ॥
गन वृद्ध कारुणि ना वा क दाने
नी न यक ॥ का सद्य ॥ का गन
खि यान स गाय यश्च गत्य का स
एका यका अकन उरु स्नान
अयामा म न द्वा स रु गाय
काय उ सथा उ य या व र्वा य ॥
न कि लि ना य ॥ स्व सिं थ सिं मा
आदिन दृग्धन याव क ॥ कृद्वा
ल व द्वा ना आसि न क ना द्वा
सखा या उरु मका व द ना दि
स्नान न ॥ न ल द्वा व सिं ल द्वा
ल ॥ ॐ गद्य वा ला रु क ल्य ॥
ॐ गद्य दि ॥ ॐ यति सिं गा सि
द व नी स य नि द्वा ल व ल य ॥

सोनिष्टयुनियद्रुक् यजुमा
 नाः सुवदथ गानास्तु
 द्वियदनिर्गसनाः सुवदथ
 द्यदागनाः सुसर्वलाकानां
 सनानास्तुत्येवव ॥ यज
 मानस्यरुथायव ॥ यज
 वाधवाधनकुरुसर्वदवानां
 दंशघ्रायनमास्तु ॥ याव
 वृष्ट्यासूर्यसामदिनीसक
 सागना ॥ यावदाकाशगंगा
 वनावर्त्तवस्तिनातव ॥ ॥
 कुर्यादवदकासं कुरुनिवि
 य ॥ दवयानाम ॥ उरु ॥ वक्र
 यणी ॥ उवक्रयज्ञानं ॥ ॥ न
 यरागु ॥ मारुग्वनी ॥ उं निव
 नामासि ॥ ॥ लक्ष्मावा ॥ को
 मात्री ॥ सुवदना ॥ ॥
 लक्ष्मा ॥ देवूनी ॥ उं विष्णु
 ननाटमासि ॥ ॥ लसि ॥ क
 नि ॥ वानाही ॥ उं यस्य कर्मा
 ॥ ॥

दतगल ॥ ॐ द्याणी ॥ उं ॐ
 द्यदी ॥ ॥ स्वधद्य ॥ वा
 मूर्ध्ना ॥ उं जानवदस्य ॥ ॥
 लखधेनवमहालक्ष्मी ॥ उं
 होनवधवर्मा ॥ ॥ निवगकि
 खाया ॥ उं निवनामासि ॥ से
 नवसेनवी ॥ स्वधद्य ॥ उं सुस
 याना ॥ ॥ सेनवरवडा ॥
 उं सुधवावटा ॥ धीतक्षारव
 सि सुयथय ॥ उं धीश्वर ॥ ॥
 धीकुरुखटका ॥ उं निलि
 वायगितिकक्ष ॥ रागवनि
 धनि ॥ उं कर्मा सुमिर्क ॥ ॥
 यक्षवकर्तुं विष्णु ॥ वि
 नायमहालक्ष्मी सनसनी
 रुव ॥ उं सद्या ॥ जानावम
 मीनि ॥ वृष्ट्या ॥ उं वरव
 नव ॥ उं यदुमा मनसा जान ॥
 ॥ गंगादिगुनिनीयनिवान ॥
 उं समुगं ॥ कर्मा लख
 नवग ॥ उं यदस्य द ॥ ॥

विनायक, काय ॥ डं नमा ग
दीया ॥ नो गरवदलाग ॥ डं
नमा हस्तसयस्थ ॥ ॥ र
गवनी का नम ॥ डं समरय
दया ॥ सक मसी सा हान ॥
डं सक मवय ॥ ॥ वक्रा वि
मूमरु ग्यन निवास्था नम्या
न ॥ डं मावय वाय ॥ ॥ ॥
यश्वक यश्वान नम्या न ॥
डं गुरित्ता गृ नाना ॥ ॥
वनी गिया गिवा ग्यरवसात्र ॥
डं द्या माय रवी न ॥ ॥ वक्रा
कव ववृ क ॥ डं वक्र यज्ञ
न ॥ ॥ विष्णु रवव ववृ क ॥
डं वृ द विष्णु ॥ ॥ गिवथ सि
सा ॥ डं नमी गान ॥ ॥ नक
उम सि ॥ डं अग्नि नानि उसा ॥
याग कारि ॥ डं था ग या ग ॥
अनक का नि देव सु ॥ डं न
सूर्यस्थ ॥ ॥ ॥ नग सन
वि ॥ डं या र मया या ॥ ॥

हुतुकादि थम ॥ डं नमा व
रुगाय ॥ असि गां गदि मना
वसि ॥ डं नमस वदमन्यव ॥ ॥
गिव वाया ॥ डं गिव वृत्ता ॥
नकि अटया ॥ डं शा भ मया
ना ॥ या गिवा रथयि ॥ डं द
ववीर्य भना भन ॥ ॥ गिव
वायथि ॥ डं नमा मुनी लयी
वाय ॥ ॥ नकि कथयि ॥
डं दृष्टा ना वक्रा नि ॥ ॥
वाय देव हासा ॥ डं नववा
य ॥ ॥ यक्र रू ॥ डं भू गे भू
का ॥ यक्र धी ॥ कुरु ॥ डं व
धायक ॥ ॥ यक्रा दि ग द
त्वा क ॥ डं कृ विव ॥ धर्म डम
नि ॥ डं वन कुरुत ॥ ॥ धर्म
गा उवा ॥ डं वन वदीका ॥ ॥
अधर्म ना ल ॥ डं वृ हस्य नेक
दि वसि ॥ ॥ वमृ घ डल धना
डं वन वस्था के रन मसि ॥ ॥
निर्मा त्या व व वरवा ॥ डं व

वीकर्म॥ ॥ ॐ वृक्षाय धी
 वेगाक॥ ॐ नानातमिद॥ ॥
 अग्निमादृश्वनीयकुलि॥
 ॐ अग्निमूर्द्धा॥ २॥ यमको
 मानीयना॥ ॐ यमनदरु॥
 ॥ ३॥ नगध्वं वृक्षीयाकुलि॥
 ॐ यमनदरी॥ ४॥ वनूधवा
 खादीयाता॥ ॐ ॐ मभव
 नूध॥ ५॥ वायव्यं नूधायणी
 यकुलि॥ ॐ नववायु॥ ६॥
 कवेन वा मछायना॥ ॐ
 कुविदं॥ ७॥ ॐ नाना माहा
 लक्ष्मी वकुलि॥ ॐ नमीगहन॥
 ॥ ८॥ कुमानयिकुलिस्रग॥
 ॐ यदस्युद॥ ॥ गवथाकु
 लिस्रग॥ ॐ मनाभनय्यय
 न॥ यागीणीयकुलिस्रग॥
 ॐ यस्मै नमः॥ ॥ कवेन क
 लिस्रग॥ ॐ ययथायथि॥
 ॥ यागात कलि॥ ॐ ॐ म
 भव नूध॥ ॥ मयमधु

ततले॥ ॐ य जायगनः॥
 स्वयं यमद॥ ॐ य जावा
 युधिवी॥ ॥ धातलवृत्तं
 यादान॥ ॐ यनं यन॥ ॥
 वृक्षाध्यादि अष्टदिग॥
 ॐ या विदिग स्वादा॥ ॥
 धनं कृत्वा दव आदिति वि
 याव शुवान धीय॥

यथागकिल द्वा र्क मादृति
 विय॥ ॐ ॐ ॐ दिनध्व
 ॐ ॥ ॥ सगुणनयक॥
 मरु जावधी यमिद्व॥ ॐ
 नीर्वादा॥ ॥
 यथागकि सं स्वादृति॥
 दग्धयानन॥ ॐ यगवलि॥
 वृक्षीयाय॥ ॐ ससा॥
 यरुविसर्जन॥ ॥ यरु
 मानाजिबर्क॥ ॐ यागीवीदं
 कीमानीयुजा शीय॥ लिस्त्र
 वनूधव वनूधनादि भाद
 नी सगुणस्वान काय॥ ॥

समय ॥ सा अ क ल कादि
वायक ॥ ॥ ण्ण नि वे द म थ
शु द य नि ष्ठा वि वि स मा य ॥

य ष्ठ ग य सा ध न ॥ डं अ द्या ॥
य ष्ठ मा न स शु द य नि ष्ठा थ
य ष्ठ ग य सा ध न ॥ वा क ॥
गु न न म क न न्या सा र्थ या
उ द्भु ज्ञा ॥ ज्ञा न्य द्भु ज्ञा ॥





